समाज विकासमाला

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ३५

कावेरी

दक्षिण की महान् नदी की रोचक कहानी

लेखक
पूर्ण सोमसुन्दरम

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जब से ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटाएंगे।

—मंत्री

पाठकों से

उत्तर भारत में जिस प्रकार गंगाजी का आदर होता है, उसी प्रकार दक्षिण में कावेरी का। वह दक्षिण की बहुत बड़ी नदी है और उसके जल से सिंचाई के साथ-साथ बहुत-से उद्योग-धंधे भी चलते हैं।

इस पुस्तक में इसी नदी की कहानी दी गई है। पुराने धर्म-ग्रंथों में उसकी बड़ी रोचक कथाएं आती हैं। वे भी इसमें दी गई हैं। साथ ही यह भी बताया है कि आज इसके जल से क्या-क्या काम हो रहे हैं और देश को कितना लाभ पहुंच रहा है।

इस पुस्तक को पढ़कर कावेरी का आपको परिचय मिलेगा, उसके साथ आपका अपनापन भी पैदा होगा।

—सम्पादक

कावेरी

: १ :

हमारे देश में कई नदियां ऐसी हैं जिनकी बराबरी दुनिया की शायद ही कोई दूसरी नदी कर सकती हो। इनमें एक है उत्तर भारत की गंगा और दूसरी है दक्षिण भारत की कावेरी।

गंगा की तरह कावेरी भी सदा बहनेवाली है। इस कारण उसे दक्षिण की गंगा कहते हैं।

कावेरी कुर्ग राज्य से निकलती है, मैसूर राज्य को सींचती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और मद्रास राज्य के एक विशाल प्रदेश को हरा-भरा बनाकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। कुर्ग की पहाड़ियों से लेकर समुद्रतक कावेरी की लंबाई चार सौ अस्सी मील है। इस लंबी यात्रा में कावेरी का रूप सैकड़ों बार बदलता है। कहीं वह पतली धार की तरह दो ऊंची चट्टानों के बीच बहती है, जहां एक छलांग में उसे पार कर सकते हैं; कहीं उसकी चौड़ाई एक मील के करीब होती है और वह सागर सी दिखाई देती है; कहीं वह

साढ़े तीन सौ फुट की ऊंचाई से जल-प्रपात के रूप में गिरती है, जहां उसका भीषण रूप देखकर और चीत्कार सुनकर, रोंगटे खड़े हो जाते हैं; कहीं वह इतनी सरल और इतनी प्यारी होती है कि उसपर बांस की लकड़ी का पुल बनाकर लोग उसे पार कर जाते हैं।

पचास के करीब छोटी-बड़ी नदियां कावेरी में आकर गिरती हैं। समुद्र में मिलने से पहले उसीसे कई शाखाएं निकल कर अलग-अलग नामों से अलग-अलग नदियों के रूप में बहती हैं।

कावेरी पर प्राचीन काल से लेकर अब तक सैकड़ों स्थानों पर बांध बने हैं। उसकी नहरों से सिंचनेवाली भूमि का विस्तार लगभग एक करोड़ एकड़ होगा। और भी लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई उसके जल से हो सकती है, यह अनुमान लगाया गया है।

निकलने के स्थान से लेकर समुद्र में गिरने के स्थान तक कावेरी के तट पर दर्जनों बड़े-बड़े नगर और उपनगर बसे हैं। बीसियों तीर्थ-स्थान हैं। अनगिनत प्राचीन मंदिर हैं और आज तो सैकड़ों कल-कारखाने भी उसके तट पर चल रहे हैं।

जहां कावेरी समुद्र से मिलती है, वह स्थान प्राचीन काल में बहुत बड़ा बंदरगाह था। दूर-दूर के

देशों से जहाज आया-जाया करते थे। पुहार नामक वह नगरी एक बड़े साम्राज्य की राजधानी थी, पर आज तो वहां पर काविरिपूम्पट्टिनम नामक एक छोटा-सा गांव रह गया है। समुद्र के उमड़ आने से प्राचीन नगर डूब गया। कहा जाता है, अब भी वहां खोज करने से बहुत से प्राचीन भवनों और मंदिरों का पता लगाया जा सकता है।

कावेरी के पवित्र जल ने कितने ही संतों, कवियों राजाओं, दानियों और प्रतापी वीरों को जन्म दिया है। इसी कारण कावेरी को 'तमिल-भाषियों की माता' कहा जाता है।

: २ :

कावेरी के निकास की दो कहानियां आग्नेय पुराण और स्क़ंद पुराण में पाई जाती हैं। ये दोनों कहानियां एक-दूसरी से कुछ भिन्न हैं।

आग्नेय पुराण में यह कहानी यों है--

प्राचीन काल में कवेर नाम का एक धर्मात्मा राजा था। उसने हिमालय में कठोर तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा उसके सामने प्रकट हुए और बोले, तुम्हें मुक्ति मिलने में अभी देर है। तुम मेरी पुत्री विष्णुमाया को अपनी ही पुत्री की

तरह पालो। उसीसे तुम्हें मुक्ति मिलेगी।

राजा कवेर ने ऐसा ही किया। विष्णुमाया उसके यहां पलकर बड़ी हुई। वह भगवान् विष्णु की अंशरूपिणी थी, इस कारण बड़ी होने पर वह हिमालय चली गई और वहां तपस्या करने लगी। राजा कवेर को मोक्ष मिल गया।

तपस्या करनेवाली विष्णुमाया के सामने भगवान् विष्णु स्वयं प्रकट हुए और बोले, "कुमारी, जग का कल्याण करने के लिए तुमने जन्म लिया है। तुम्हारे दो रूप और दो नाम होंगे। कवेर की पुत्री होने के कारण तुम कावेरी कहलाओगी और इस रूप में नदी बनकर सह्य-पर्वत से प्रवाहित होगी। तुम्हारा दूसरा नाम लोपामुद्रा होगा। उस रूप में तुम महामुनी अगस्त्य की पत्नी बनोगी। अगस्त्य मुनि तुम्हें सह्य-पर्वत ले जायंगे। उनकी प्रतीक्षा करो।"

भगवान् विष्णु ये बातें कर ही रहे थे कि ठीक उसी समय हिमालय के दूसरे स्थान पर अगस्त्य मुनि तपस्या कर रहे थे। ब्रह्मा उनसे बोले, "पुत्र तुमने विवाह नहीं किया है। इस कारण तुम्हारे पिता और पुरखाओं की आत्माओं को शांति नहीं मिल रही है। तुम विवाह करके घर-गिरस्ती चलाओ। उससे जग का

मंगल होगा और तुम्हें भी मोक्ष मिलेगा। इसी पर्वत पर लोपामुद्रा नाम की एक कन्या तपस्या कर रही है। उसीको तुम पत्नी बनाओ।"

ब्रह्मा की आज्ञा मानकर अगस्त्य लोपामुद्रा के पास आये और उससे विवाह कर लिया। देवताओं और मुनियों ने उन दोनों को आशीर्वाद दिये।

थोड़े दिनतक हिमालय की घाटी में दोनों पति-पत्नी सुख से रहे। उसके बाद अगस्त्य ने लोपामुद्रा से कहा, "दक्षिण में लोग जल के अभाव से कष्ट उठा रहे हैं, धरती ऊसर पड़ी है। इसलिए तुम जल का रूप धारण कर मेरे कमण्डल में प्रवेश करो। उसमें गंगा जैसी पवित्र नदियों का जल भरा है। तुम भी उसमें समा जाओ। मैं तुम्हें सह्य-पर्वत पर ले जाऊंगा। ब्रह्मा की आज्ञा है।"

लोपामुद्रा ने तत्काल जल का रूप धारण कर अपने पति के कमंडल में प्रवेश किया। अगस्त्य मुनि कमंडल को लेकर सह्य-पर्वत पर गये और वहीं तपस्या करने लगे। जिस स्थान पर वह तपस्या करने लगे, वहीं ब्रह्मदेव भी तपस्या कर रहे थे। इस कारण वह पर्वत ब्रह्मगिरि भी कहलाता था।

वे दोनों तपस्या कर रहे थे कि इतने में उस

पर्वत पर अचानक एक आंवले का पेड़ उगा और देखते-देखते फलों से लद गया। ब्रह्मा ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा तो मालूम हुआ कि भगवान् विष्णु ही उस आंवले के पेड़ के रूप में प्रकट हुए हैं। ब्रह्मा इसी अवसर की प्रतीक्षा में थे और उस वृक्ष पर चढ़ाने के लिए कैलास में बहनेवाली विरजा नदी का जल शंख में भर लाये थे। उन्होंने वह पवित्र जल, आंवले के पेड़ के रूप में खड़े भगवान् विष्णु के चरणों पर चढ़ाया।

ठीक इसी समय अगस्त्य मुनि अपना कमंडल एक चट्टान पर रखकर स्नान करने गये। उस समय भगवान् की आज्ञा से प्रचंड आंधी चली। उस आंधी में कमंडल चट्टान पर से गिर कर लुढ़क गया और उसके भीतर से कावेरी का जल नदी के रूप में बह निकला। विरजा के जल से मिलकर वह और पवित्र हुआ।

अगस्त्य मुनि स्नान करके लौटे तो देखते क्या हैं कि जहां चट्टानें-ही-चट्टानें थीं, वहां एक नदी बह रही है। तब उनको भगवान् की लीला का बोध हुआ और वह प्रसन्न मन से वहां से चले गये।

स्कंद पुराण में यह कथा इस प्रकार है :—

एक बार दक्षिण का विंध्य पर्वत उत्तर के मेरु

की बराबरी करने की इच्छा से बढ़ने लगा। वह इतना ऊंचा बढ़ गया कि उससे सूरज और दूसरे ग्रहों का रास्ता रुक गया। इस कारण संसार में अंधेरा छा गया। लोग सूरज के प्रकाश और गरमी के लिए तड़पने लगे। यह हाल देखकर देवताओं ने अगस्त्य मुनि से विनती की कि वह किसी प्रकार विंध्य पर्वत की बढ़ती को रोक दें। अगस्त्य ने उनकी विनती मान ली और शिवजी को लक्ष्य कर तपस्या की। जब शिवजी प्रकट हुए तो अगस्त्य मुनि ने उनसे प्रार्थना की, "भगवन्, जग के कल्याण के लिए विंध्य पर्वत की बढ़ती को रोकना मैंने मान लिया है। आप मुझे उसकी शक्ति दें। साथ ही एक ऐसा स्रोत भी मुझे दें जिसमें से सदा जल बहता रहे। इससे मैं अपनी इच्छानुसार कहीं भी जाकर तपस्या कर सकूंगा।"

भगवान् शंकर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन दिनों कावेरी कैलास पर्वत पर बहती थी। शिवजी ने आज्ञा दी कि वह अगस्त्य मुनि के कमंडल में चली जाय और जब वह हाथ से इशारा करें तब वह उनके कमंडल से निकलकर धरती पर नदी के रूप में बहे। शिवजी की आज्ञा मानकर कावेरी अगस्त्य मुनि के कमंडल में चली गई।

अगस्त्य मुनि कमंडल को लेकर दक्षिण चले। रास्ते में उन्होंने विंध्य पर्वत से कहा, "पर्वतराज, जरा लेट जाओ, जिससे मैं आसानी से दक्षिण जा सकूं और जबतक मैं लौट न आऊं तबतक तुम लेटे ही रहना, बढ़ना मत।"

विंध्य पर्वत घमंडी था, परन्तु तपस्वियों का बड़ा आदर करता था। उसने झट अगस्त्य की बात मान ली और अपना आकार छोटा करके लेट गया। इससे सूरज के लिए रास्ता खुल गया और वह सदा की भांति संसार पर घूमकर प्रकाश देने लगा। लोगों का कष्ट दूर हुआ।

विंध्य पर्वत को लिटाने के बाद अगस्त्य दक्षिण गये और सह्य-पर्वत पर जाकर तपस्या करने लगे। उनके कमंडल में कावेरी बंद थी और उनके इशारे की प्रतीक्षा कर रही थी।

उन दिनों दक्षिण में शूरपद्म नाम का एक असुर राजा राज करता था। उसने सभी देवताओं को बंदी बना रक्खा था। उसके डर के मारे देवताओं का राजा इंद्र दक्षिण के एक वन में छिपकर शिवजी की आराधना कर रहा था।

इतने में असुर राजा की आज्ञा से मेघों ने

बरसना छोड़ दिया। सभी वन सूख गये। पूजा के लिए फूल कहीं नहीं मिले।

यह देखकर इन्द्र बड़ा दुखी हुआ। संयोग से उस समय देवर्षि नारद उधर से निकले। इन्द्र ने उनको अपना दुखड़ा सुनाया। नारद बोले, "सह्य-पर्वत पर अगस्त्य मुनि तपस्या कर रहे हैं। उनके कमंडल में कावेरी नदी बंद है। तुम गणेश से प्रार्थना करो कि वह किसी तरह कावेरी नदी को कमंडल से बहाने का उपाय करें। तब वर्षा के बिना भी यह सारी धरती हरी-भरी हो उठेगी और तुम्हारी पूजा ठीक-ठीक चल सकेगी।"

इंद्र ने उनकी सलाह मान ली और गणेश की तपस्या की। गणेश प्रकट हुए। उसने अपने दुःख की कथा उन्हें सुनाई। गणेश ने उसे अभय दान दिया और कौए का रूप धरकर उस पर्वत पर गये, जहां अगस्त्य मुनि तपस्या कर रहे थे।

कमंडल अगस्त्य मुनि के दायें हाथ में था। गणेश कौए के रूप में उसपर जा बैठे। मुनि ने आंखें खोलीं और कौए को भगाने के लिए हाथ हिलाया। मौका पाकर गणेश ने कमंडल को लुढ़का दिया और कावेरी से बोले, "अगस्त्य मुनि इशारा करके कह रहे

हैं, वह निकलो !"

कावेरी तो यह चाहती ही थी ! वह प्रसन्न मन से कमंडल से निकल आई और धरती को उपजाऊ बनाती हुई नदी के रूप में बहने लगी । अगस्त्य मुनि ईश्वर की यह लीला देखकर बहुत मुग्ध हुए ।

तमिल भाषा में कावेरी को 'काविरि' भी कहते हैं । काविरि का अर्थ है उपवनों का विस्तार करने वाली । अपने जल से ऊसर भूमि को भी वह उपजाऊ बना देती है । इस कारण उसे 'काविरि' कहते हैं ।

कावेरी का एक अर्थ है कवेर की पुत्री । राजा कवेर ने उसे पुत्री की तरह पाला था, इस कारण उसका वह नाम पड़ा ।

कावेरी को 'सह्य-आमलक तीर्थ' और 'शंख-तीर्थ' भी कहते हैं। ब्रह्मा ने शंख के कमंडल से आंवले के पेड़ की जड़ में विरजा नदी का जो जल चढ़ाया था, उसके साथ मिलकर बहने के कारण कावेरी के ये नाम पड़े।

तमिल भाषा में कावेरी को प्यार से 'पोन्नी' कहते हैं। पोन्नी का अर्थ है सोना उगानेवाली । कहा जाता है कि कावेरी के जल में सोने की धूल मिली हुई है । इस कारण इसका वह नाम पड़ा । एक और जानने योग्य बात यह है कि कावेरी में मिलनेवाली कई

उपनदियों में से दो के नाम कनका और हेमावती हैं। इन दोनों नामों में भी सोने का संकेत है।

: ३ :

दक्षिण भारत में दो लंबी पर्वतमालाएं हैं। एक पश्चिम में और दूसरी पूरब में। पश्चिम की पर्वतमाला को पश्चिमी घाट और पूरब की पर्वतमाला को पूर्वी घाट कहते हैं। इनमें पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग में एक सुंदर राज्य है, जिसे कुर्ग कहते हैं। इस राज्य में एक पहाड़ का नाम सह्य-पर्वत है। इस पहाड़ को 'ब्रह्मकपाल' भी कहते हैं।

इस पहाड़ के एक कोने में एक छोटा-सा तालाब बना है। तालाब में पानी केवल ढाई फुट गहरा है। इस चौकोर तालाब का घेरा एक सौ बीस फुट का है। तालाब के पश्चिमी तट पर एक छोटा-सा मंदिर है। मंदिर के भीतर एक तरुणी की सुंदर मूर्त्ति स्थापित है। मूर्त्ति के सामने एक दीप लगातार जलता रहता है।

यही तालाब कावेरी नदी का उद्गम-स्थान है। पहाड़ के भीतर से फूट निकलनेवाली यह सरिता पहले उस तालाब में गिरती है, फिर एक छोटे से झरने के रूप में बाहर निकलती है। देवी कावेरी की मूर्त्ति की

यहां पर नित्य पूजा होती है। कावेरी का स्रोत कभी नहीं सूखता।

कावेरी कुर्ग से निकलती अवश्य है, पर वह वहां की जनता को कोई लाभ नही पहुंचाती। कुर्ग के घने जंगलों में पानी काफ़ी बरसता है, इस कारण वहां कावेरी का कोई काम भी नहीं है। उल्टे कावेरी, कुर्ग की दो और नदियों को भी अपने साथ मिला लेती है और पहाड़ी चट्टानों के बीच में सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलती, रास्ता बनाती, मैसूर राज्य की ओर बढ़ती है। कावेरी से मिलनेवाली पहली नदी का नाम कनका है और दूसरी का नाम हेमावती।

कनका से मिलने से पहले कावेरी की धारा इतनी पतली होती है कि उसे नदी के रूप में पहचानना भी कठिन होता है। कनका से मिलने के बाद उसे नदी का रूप और गति प्राप्त होती है। सह्य-पर्वत से बहनेवाले सैकड़ों छोटे-छोटे सोते भी यहां पर उसमें आकर मिल जाते हैं। इस स्थान को 'भागमंडलम' कहते हैं।

हेमावती नदी मैसूर राज्य के तिप्पूर नामक स्थान पर कावेरी से आकर मिलती है।

इसी कारण कहा जाता है कि कावेरी कुर्ग की पुत्री है। नैहरवाले पुत्री को बहुत कुछ देकर बिदा

करते हैं, परंतु उससे कुछ भी नहीं लेते। इसी प्रकार कुर्ग ने अपनी पुत्री कावेरी को कनका और हेमावती नाम की दो सहेलियों के संग विदा किया, परन्तु उससे कोई लाभ नहीं उठाया।

कावेरी के उद्गम-स्थान पर हर साल सावन के महीने में बड़ा भारी उत्सव मनाया जाता है। यह है कावेरी की विदाई का उत्सव। कुर्ग के सभी हिंदू लोग, विशेषकर स्त्रियां, इस उत्सव में बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लेती हैं। उस दिन कावेरी की मूर्त्ति की विशेष पूजा होती है। तलैकावेरी कहलानेवाले उद्गम-स्थान पर सब स्नान करते हैं। स्नान करने के बाद प्रत्येक स्त्री कोई-न-कोई गहना, उपहार के रूप में उस तालाब में डालती है। यह दृश्य ठीक वैसा ही होता है, जैसा कि नई विवाहित लड़की की विदाई का दृश्य।

इस संबंध में एक रोचक कहानी कही जाती है। सह्य-पर्वत ने अपनी लजीली बेटी कावेरी को उसके पति समुद्रराज के पास भेजा। जब बेटी घर से विदा होकर चली गई तब सह्य-पर्वत को भय हुआ कि कहीं ससुराल वाले मेरी बेटी को गरीब न समझ लें। इसलिए उसने कनका नाम की युवती को कई उपहारों

के साथ दौड़ाया और कहा कि तुम जल्दी जाकर कावेरी के साथ हो लो।

कनका चली गई और भागमंडलम नामक स्थान पर कावेरी से मिली। उपहार का शेष भाग यहीं पर कावेरी को मिला, इस कारण इस स्थान का नाम भागमंडलम पड़ा।

परन्तु पिता सह्य पर्वत का भय अब भी दूर नहीं हुआ। उसे लगा कि मैंने पुत्री को उतने उपहार नहीं दिये जितने कि मैं दे सकता था। उसने हेमावती नाम की दूसरी लड़की को बुलाया और बहुत से उपहार देकर कहा कि तुम किसी और रास्ते से तेजी से जाओ। हेमावती स्वयं अपनी सहेली के चली जाने पर दुखी थी। इसलिए सह्यपर्वत की आज्ञा से वह बहुत प्रसन्न हुई और आंख मूंद कर भागी।

उधर कावेरी कनका से मिलने के बाद बहुत प्रसन्न हुई और विदाई का दुख भूल गई। भागमंडलम से चित्र नामक स्थान तक दोनों सहेलियां ऊंची-ऊंची चट्टानों के बीच में हँसती-खेलती, किलोलें करती हुई चलीं, परन्तु चित्रपुरम पहुंचने के बाद उनके कदम आगे नहीं बढ़े, क्योंकि वे कुर्ग की सीमा पर पहुंच गई थीं। आगे मैसूर राज्य आ गया था। उसमें

प्रवेश करने का मतलब नैहर से सदा के लिए बिछुड़ना था। इस कारण वे असमंजस में पड़ गईं और बीस मील तक कुर्ग और मैसूर की सीमा के साथ-साथ बहीं। चित्रपुरम से कण्णेकाल नामक स्थानतक कुर्ग और मैसूर की सीमा कावेरी नदी ही है।

कण्णेकाल के आगे कावेरी भारी मन से अपने पिता के घर से सदा के लिए बिछुड़ गई। बिछोह का दुःख उसे इतना था कि वह मैसूर के हासन जिले में पहाड़ी चट्टानों के बीच में मुंह छिपाकर रोती हुई चली। तिप्पूर नामक स्थान पर वह उत्तर की ओर मुड़ी, मानों पिता के घर लौट जायगी; परन्तु देखती क्या है कि उसकी सहेली हेमावती उत्तर से बड़े वेग से चली आ रही है। उसी स्थान पर दोनों सहेलियां गले मिलीं।

हेमावती ने अपने को और सह्य-पर्वत के भेजे हुए सब उपहारों को सखी कावेरी के चरणों में न्यौछावर कर दिया। इससे प्रसन्न होकर कावेरी ने घर लौटने का विचार छोड़ दिया और दक्षिण-पूरब की ओर बहने लगी।

कुर्ग से तिप्पूर तक कावेरी नदी के बहाव की भिन्न-भिन्न चालें देखकर यह मनोरंजक कहानी गढ़ी गई है।

मैसूर राज्य में लक्ष्मणतीर्थ नाम की एक और छोटी नदी दक्षिण से आकर कावेरी से मिलती है। कावेरी, हेमावती और लक्ष्मणतीर्थ ये तीनों नदियां जरा आगे-पीछे एक-दूसरी से मिलती हैं और प्रचंड वेग से मैसूर राज्य की राजधानी की ओर बहती हैं।

मैसूर राज्य में कावेरी पर पंद्रह बांध बनाये गए हैं, जिनसे लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। इसके अलावा कावेरी के जल से वहां बहुत बड़ी मात्रा में बिजली भी पैदा की जाती है, जिससे मैसूर राज्य के उद्योग-धंधे चलते हैं। मैसूर राज्य में सिंचाई के लिए कावेरी पर बने हुए बांधों में सबसे बड़ा कण्णम्बाड़ी का बांध है। इस बांध के कारण जो विशाल जलाशय बना है, उसीको कृष्णराज सागरम कहते हैं। यह जलाशय मैसूर राज्य की राजधानी मैसूर नगर से थोड़ी ही दूर पर बना है। इसी जलाशय के पास वृन्दावन नाम का एक विशाल उपवन भी है। इस उपवन की सुन्दरता और रात के समय वहां जगमगाने वाली रंग-बिरंगी बिजली की बत्तियां आदि को देखकर भ्रम होता है कि हम कहीं इंद्रपुरी में तो नहीं आ गये हैं। इस सारे सौंदर्य और जगमगाहट का आधार कावेरी का पवित्र जल ही है।

: ४ :

कृष्णराज सागरम का काम १९११ में शुरू हुआ और १९२७ में पूरा हुआ। यहां बांध पर से देखें तो सचमुच कावेरी का फैला हुआ जल एक विशाल सागर-सा लगता है। इस बांध को बनाने में ढाई करोड़ रुपया खर्च हुआ। बांध की लंबाई ८६०० फुट (यानी करीब पौने दो मील) है, ऊंचाई १३० फुट। इस बांध के कारण जो जलाशय बना है उसका फैलाव पचास वर्ग मील है।

मैसूर की सरकार ने इस बांध के बीच में माता कावेरी की एक सुंदर मूर्त्ति खड़ी की है। मूर्त्ति का दायां हाथ दान करने की मुद्रा में है। उस हाथ से पानी की धारा सदा बहती रहती है। माता कावेरी अपने बच्चों को जल के रूप में जीवन दे रही है, यही इसका भाव है।

कावेरी की नहरों से इस समय मैसूर राज्य में सवा लाख एकड़ भूमि में धान और दूसरे अनाज पैदा होते हैं और ४० हजार एकड़ भूमि में गन्ने की खेती की जाती है। इसके अलावा हजारों एकड़ भूमि में तरह-तरह के फल और साग-सब्जियां पैदा की जाती हैं।

इस तरह मैसूर राज्य की जनता को अन्न देने-

वाली कावेरी उनके उद्योग-धंधों के लिए बिजली पैदा करके उनकी शक्ति और धन को भी बढ़ा रही है। पिछले तीस वर्षों में मैसूर में सैकड़ों नये कल-कारखाने खुले हैं, जिनसे लाखों लोगों को रोजगार मिला है। ये सब कारखाने कावेरी नदी के प्रवाह से पैदा की जानेवाली बिजली से ही चलते हैं।

मैसूर में इस तरह पन-बिजली पैदा करने के जो बिजलीघर बने हुए हैं, उनमें सबसे बड़ा शिवसमुद्रम के जल-प्रपात के पास बना है।

शिवसमुद्रम प्राचीन स्थान है। यह मैसूर नगर से करीब ३५ मील उत्तर-पूरब में कावेरी के दो-आब में बसा है। यहां पर कावेरी का जल, पहाड़ की बनावट के कारण, विशाल झील की तरह दिखाई देता है। इसी झील से थोड़ी दूर आगे माता कावेरी तीन सौ अस्सी फुट की ऊंचाई से जल-प्रपात के रूप में गिरती है।

शिवसमुद्रम की इसी स्वाभाविक झील से नहरों द्वारा कावेरी का जल दो मील दूर तक ले जाया गया है। जहां बिजलीघर बना है, वह स्थान शिवसमुद्रम के जलाशय से करीब छः सौ फुट नीचे है। तेरह बड़े-बड़े नलों से शिवसमुद्रम का पानी बिजलीघरतक ले जाया जाता है। बिजलीघर के पास ये नल, चार सौ

फुटतक सीधे उतरते हैं। इस कारण इनमें से बहने वाले पानी का वेग बहुत ही प्रचंड होता है। बिजली-

मैसूर में कावेरी का एक सुप्रसिद्ध जल-प्रपात
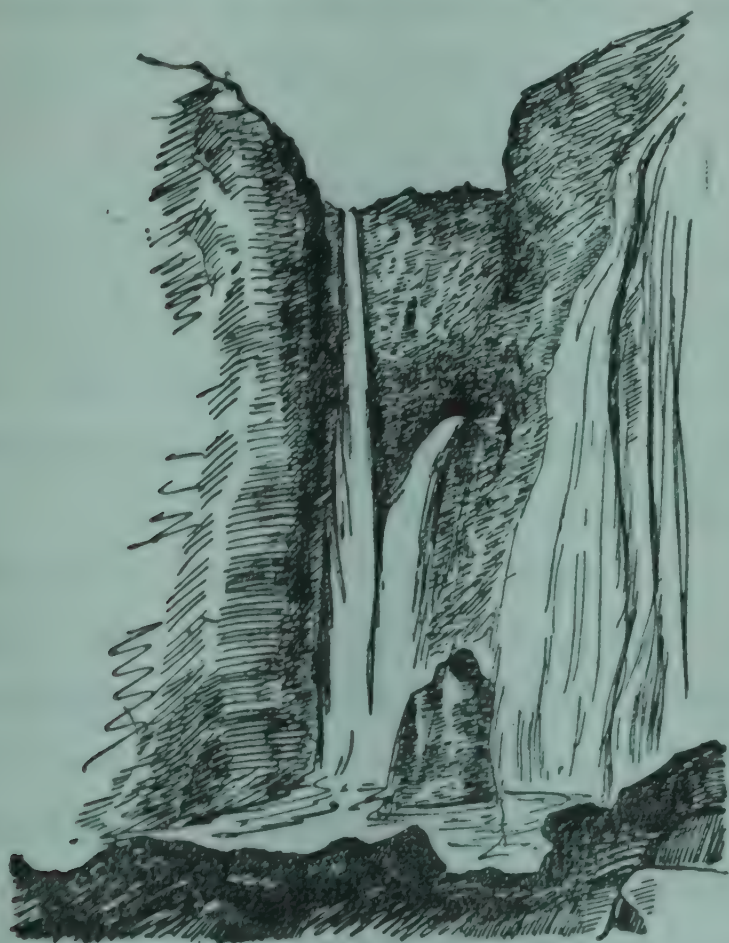
घर में रहट की तरह के जो फौलादी पहिये बने हुए हैं, उनपर पानी का दबाव पड़ने पर वे बड़े वेग से घूमते

हैं। इन बड़े-बड़े पहियों के घूमने से बड़ी मात्रा में बिजली पैदा होती है। इस बिजली को सारे मैसूर राज्य में तारों द्वारा बांटा जाता है। सैकड़ों नगरों को प्रकाश और दर्जनों कारखानों को बिजली इस शक्ति से मिलती है।

इस तरह मैसूर राज्य को हराभरा बनाकर उसके उद्योगों के लिए बिजली पैदा कर देने के बाद कावेरी तमिलभाषी मद्रास राज्य की ओर बहती है। इस बीच कई छोटी-बड़ी नदियां उसमें आकर मिलती हैं। मैसूर की सीमा के अंदर कावेरी से मिलनेवाली अंतिम दो नदियां शिम्शा और अर्कावती हैं।

मैसूर राज्य से बिदा होकर कावेरी शेलम और कोयम्बुत्तूर जिलों की सीमा पर मद्रास राज्य में प्रवेश करती है। यहां पर भी कई उपनदियां उसमें आकर मिलती हैं।

इसी सीमाप्रदेश में 'होगेनगल' नाम का विख्यात जल-प्रपात है। यहां पर कावेरी इतने प्रचंड वेग से चट्टानों पर गिरती है कि उससे छितराने वाले छींटे धुएं की तरह आकाश में फैल जाते हैं। धुएं का यह बादल, कई मील दूर तक दिखाई देता है। इसी कारण कन्नड़ भाषा में इस जल-प्रपात को 'होगेनगल' कहा

जाता है, जिसका अर्थ है धुएं का प्रपात ।

हां, नगल जल-प्रपात के पास एक गहरा जलाशय स्वाभाविक रूप से बना है। इसको 'यागकुंडम'–यानी 'यज्ञ की वेदी' कहते हैं। इसके संबंध में एक रोचक कहानी कही जाती है।

बहुत दिन पहले, चोल देश का एक राजा शिकार खेलता हुआ इस स्थान पर पहुंचा। प्रचंड वेग से गिरने वाले जल-प्रपात को देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ, परंतु उसने देखा कि जल-प्रपात के आगे नदी का सारा पानी चट्टानों के भीतर ही चला जाता है, आगे नहीं बढ़ता। उसने सोचा कि यदि यह सारा जल मेरे राज्य की ओर बहे तो वहां की धरती कितनी उपजाऊ बन जायगी !

राजा यह सोच ही रहा था कि आकाशवाणी हुई, "इस जलाशय के नीचे भगवान विष्णु का चक्र है। कोई नीतिमान राजा उस चक्र पर अपनी बलि चढ़ाये तभी नदी का प्रवाह आगे बढ़ेगा, नहीं तो नहीं।"

ये शब्द सुनते ही राजा ने उस कुंड में कूदकर अपनी बलि चढ़ा दी। नतीजा यह हुआ कि कावेरी का जल, तमिल बोलनेवाले लोगों का कल्याण करने के लिए, आगे बह निकला। इसी कारण इस जलाशय का

नाम यज्ञ की बलिवेदी—'यागकुंडम' पड़ गया।

यहां तक कावेरी पहाड़ी इलाकों में बहती रही। अब वह समतल मैदान में बहने लगती है। शेलम और कोयम्बुत्तूर जिलों की सीमा पर वह दो पहाड़ों के बीच में बहती है। सीता पर्वत और पालमलै कहलाने वाले इन्हीं दो पहाड़ों के बीच एक विशाल बांध बना है, जो 'मेट्टूर-बांध' के नाम से प्रसिद्ध है।
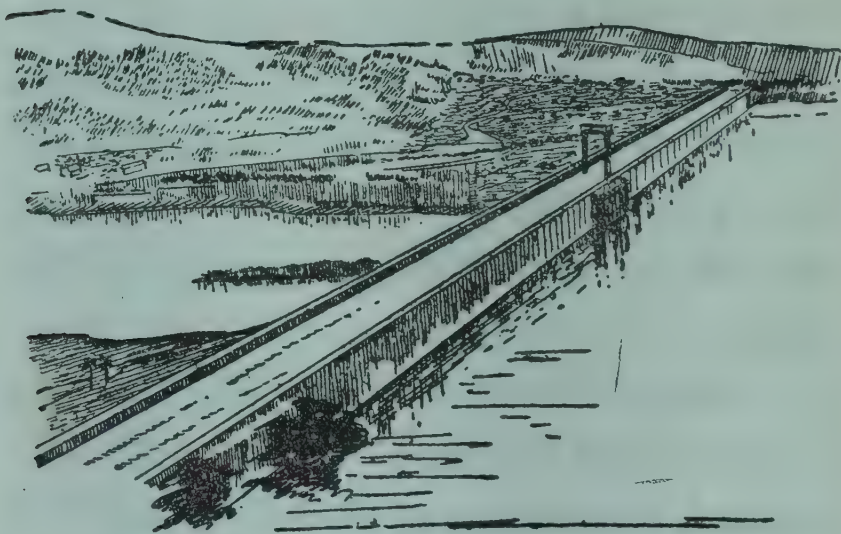
कावेरी तट पर मेट्टूर बांध का एक दृश्य

मद्रास राज्य में कावेरी पर कितने ही छोटे-बंड़े, नये-पुराने बांध बने हैं; परंतु उनमें मेट्टूर का बांध सबसे बड़ा है। मैसूर राज्य के कृष्णराज सागरम से भी

मेट्टूर का बांध अधिक विशाल है। इस बांध का निर्माण १९२५ में आरंभ हुआ और नौ साल बाद, १९३४ के अगस्त के महीने में पूरा हुआ। यह बांध ५३०० फुट (यानी एक मील से अधिक) लंबा और १७६ फुट ऊंचा है। इससे जो जलाशय बना है, उसका फैलाव कोई साठ वर्गमील का है। बांध के बीच में बिजलीघर है। इससे पैदा की जानेवाली बिजली से दूर-दूर तक के शहर और गांव लाभ उठाते हैं।

इस विशाल बांध के निर्माण में कोई साढ़े चार करोड़ रुपया हुआ। इतना कम खर्च होने का मुख्य कारण यह है कि बांध का तीन-चौथाई से अधिक काम मजदूरों के सहारे किया गया। केवल एक-चौथाई काम यंत्रों से हुआ।

मेट्टूर के जलाशय से कई हजार मील लंबी छोटी-बड़ी नहरें तिरुचि और तंजाऊर जिलों के खेतों को सींचती हैं। सात लाख एकड़ से अधिक भूमि की सिंचाई इन नहरों से होती है। अनुमान लगाया गया है कि और पांच लाख एकड़ भूमि की सिंचाई मेट्टूर-बांध की नहरों से हो सकती है।

कुछ लोग समझते हैं कि बांध बनाने की कला हमारे पुरखों को नहीं आती थी। विदेशियों से ही

हमने यह कला सीखी, परंतु यह धारणा गलत है। आज से लगभग दो हजार साल पहले कावेरी-प्रदेश में करिकालन नाम का प्रतापी राजा राज करता था। उसका राज्य चोल-राज्य के नाम से प्रसिद्ध था। पुहार नामक नगरी, जो उन दिनों कावेरी के समुद्र-संगम के स्थान पर बसी थी, इस राज्य की राजधानी थी। करिकालन के समय में कावेरी का तट स्थान-स्थान पर शिथिल हो गया था। इस कारण बाढ़ आने पर नदी के किनारे पर के खेत उजड़ जाते थे और बस्तियों में भी तबाही मच जाती थी। इस विपदा को रोकने और कावेरी के जल से खेतों की सिंचाई बढ़ाने के विचार से राजा करिकालन ने एक बिशाल योजना बनाई। उसने निश्चय किया कि श्रीरंगम से लेकर पुहार तक कावेरी नदी के दोनों किनारों को खूब ऊंचा किया जाय। श्रीरंगम से पुहारतक कावेरी नदी की लंबाई एक सौ मील से अधिक है। आजकल, जब हर तरह के यंत्र काम में लाये जाते हैं तब भी इतनी दूर तक एक बड़ी नदी के दोनों किनारों को ऊंचा करने का काम बहुत कठिन होगा। दो हजार साल पहले, जब किसी प्रकार के यंत्र नहीं थे, इतनी विशाल योजना को पूरा करना बड़ा कठिन काम रहा होगा।

राजा करिकालन ने इस योजना को पूरा करके छोड़ा। इसके लिए उसने प्रजाजनों, सैनिकों और सिंहल (लंका) से लाये गए बारह हजार युद्ध-बंदियों से काम लिया। जब काम पूरा हुआ तब ये युद्ध-बंदी छोड़ दिये गए।

करिकालन ने किनारों को ऊंचा करके ही संतोष नहीं कर लिया। उसने कई नहरें खुदवाईं और छोटे-बड़े कई बांध बनवाये। नतीजा यह हुआ कि करिकालन के समय में चोल राज्य धन-धान्य से भरपूर रहा। वहां का वाणिज्य बढ़ा। तमिल भाषा के प्राचीन ग्रंथों में करिकालन का खूब यश गाया गया है। कवियों ने उसे भगवान विष्णु का अवतार तक कहा है।

श्रीरंगम के पास कावेरी नदी और उसकी शाखा कोल्लिडम नदी साथ-साथ बहती है। इन दोनों को उल्लारु नाम की नहर मिलाती है, परन्तु यहां कावेरी की सतह कोल्लिडम से ऊंची है। इससे कावेरी का सारा जल कोल्लिडम में बह जाता था और बेकार हो जाता था।

आज से सोलह सौ साल पहले चोल राज्य के एक राजा ने इस ओर ध्यान दिया। उसने उल्लारु के बीच एक विशाल बांध बनाकर कावेरी के जल को

कोल्लिडम नदी में बहने से रोका। कल्लणै कहलाने वाला यह प्राचीन बांध केवल पत्थरों और मिट्टी से बना है, परंतु न जाने इस मिट्टी में क्या चीज मिलाई गई थी कि आजतक करीब ११ सौ फुट लंबा यह बांध ज्यों-का-त्यों खड़ा है और कावेरी के प्रवाह को बेकार जाने से रोक रहा है। इस बांध को देखकर बड़े-बड़े विदेशी इंजिनियर भी अचंभे में आ जाते हैं।

सन् १८४० में इस प्राचीन बांध में कुछ सुधार किया गया, जिससे पानी को आवश्यकता के अनुसार रोका या छोड़ा जा सके।

: ५ :

इस प्रकार मैसूर और मद्रास राज्य की सुख-समृद्धि को बढ़ानेवाली माता कावेरी ने सैकड़ों साम्राज्यों को बनते-बिगड़ते देखा है। मैसूर में गंग और होयसल राज्य इसी नदी के बल पर पनपे और फूले-फले थे। उनकी राजधानी श्रीरंगपट्टणम कावेरी के तट पर ही बसी थी। १५वीं सदी में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना और विस्तार इस नदी ने देखा। बाद में मरहठों और मुसलमानों के कई हमले देखे। सन् १७५७ में हैदरअली नाम के एक सिपाही ने मरहठों को रुपये देकर मैसूर राज्य

की राजधानी श्रीरंगपट्टणम पर कब्जा कर लिया था। बाद में उसके बेटे टीपू सुलतान ने दिल्ली पर चढ़ाई करने के विचार से कावेरी पर पत्थर का एक पुल बनवाया। वह पुल आज भी मौजूद है। टीपू दिल्ली पर तो चढ़ाई नहीं कर सका, पर उसने अंग्रेजों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़कर उनके छक्के छुड़ा दिये थे। अंत में, इसी कावेरी के तट पर, टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की थी।

तमिलभाषी प्रदेश में तो कावेरी ने ऐसे प्रतापी वीर और संत देखे हैं, जिन्होंने देश का मस्तक ऊंचा किया था। इसी कावेरी के तट पर चोल-साम्राज्य बना और फैला। चोल राजा करिकालन ने हिमालय पर अभियान किया और उसके शिखर पर बाघ का चिह्न लगा हुआ अपना झंडा अंकित कर आया। करिकालन के समय समुद्रतट पर कावेरी के संगम-स्थल पर पुहार नामक विशाल बंदरगाह बना। वहां से रोम, यूनान, चीन और अरब को तिजारती जहाज जाते-आते थे। तमिल के प्राचीन ग्रंथों में पुहार नगर का वर्णन पढ़कर गर्व से माथा ऊंचा हो जाता है। यूनान के इतिहास में भी इस नगर का वर्णन मिलता

है। यूनानी लोग इस नगर को 'कबेरस' कहते थे। कबेरस कावेरी शब्द से बना है।

ईसा की नवीं सदी में राजराजन नाम का एक प्रतापी राजा इसी कावेरी के प्रदेश में हुआ। उसने लंका पर विजय पाई और बर्मा, मलाया, जावा और सुमात्रा को भी अपने अधीन कर लिया। इन देशों में राजराजन के समय में बने कितने ही मंदिर आजतक विद्यमान हैं। राजराजन के पास एक विशाल नौसेना
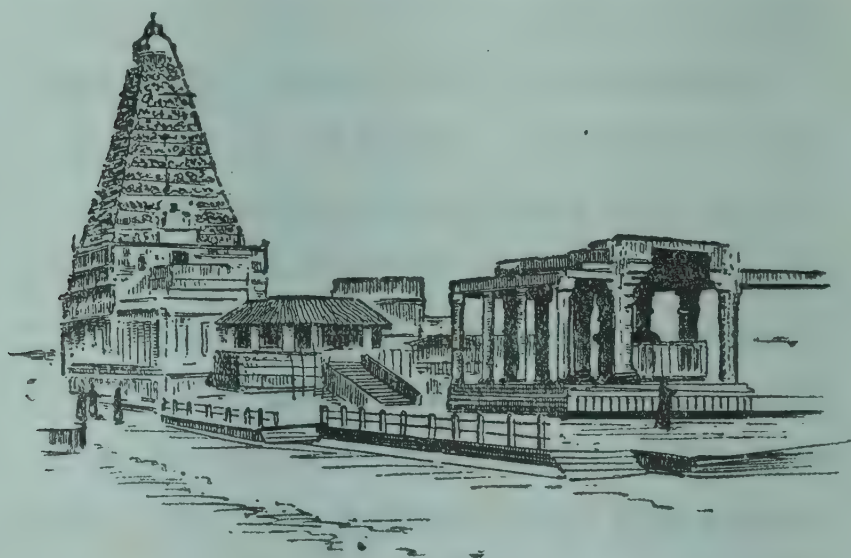
तंजावूर का सुप्रसिद्ध बृहदीश्वर मंदिर

थी। तंजावूर में राजराजन ने शिवजी का जो सुंदर मंदिर बनवाया था, उसकी शिल्पकला को देखकर

विदेशी भी दांतों-तले उंगली दबाते हैं। इस राजराजन की एक उपाधि है "पोन्नियिन शेलवन," जिसका अर्थ है "सुनहरी कावेरी का लाड़ला बेटा।"

राजराजन के बाद माता कावेरी ने अपने ही बेटों को एक-दूसरे से लड़ते देखकर आंसू बहाये। कावेरी के पुनीत जल में भाइयों ने भाइयों का खून बहाया।

फिर मुसलमान आये। उनके बाद आंध्र और मरहठे आये। आंध्रों और महाराष्ट्र के पेशवाओं ने कावेरी के जले हृदय को अपने सुशासन से शांत किया।
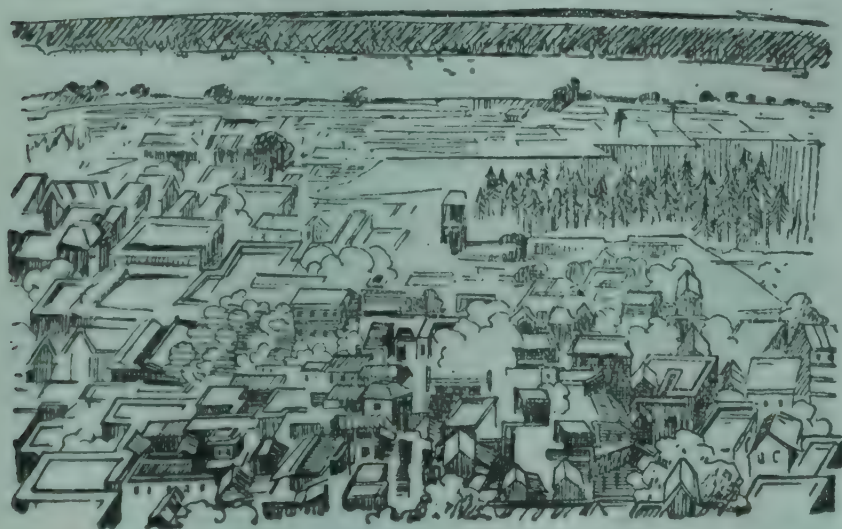
कावेरी तट पर स्थित तिरुचिरापल्ली का एक दृश्य

पेशवाओं के राज्यकाल में दक्षिण के मंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ, नये-नये विद्यालय बने और पुस्तकालय

भी। कावेरी के तट पर तिरुवैयारू नामक स्थान पर पेशवाओं ने जो संस्कृत विद्यालय स्थापित किया था, वह आजतक उनका यश गा रहा है। राजधानी तंजावूर में पेशवाओं ने सरस्वती महल के नाम से एक विशाल पुस्तकालय बनाया था।

: ६ :

कावेरी के पुण्य जल ने धर्म वृक्ष को भी सींचा और आज भी सींच रहा है। कावेरी के तीन दोआबों में भगवान विष्णु के तीन प्रसिद्ध मंदिर बने हैं। तीनों में अनंतनाग पर शयन करनेवाले भगवान विष्णु की मूर्त्ति बनी है, इस कारण इनको श्रीरंगम कहा जाता है। इनमें मैसूर की प्राचीन राजधानी श्रीरंगपट्टणम आदिरंगम कहलाता है। शिवसमुद्रम के दोआब पर मध्यरंगम नाम का दूसरा मंदिर है और मद्रास राज्य के तिरुचिरापल्ली नामक नगर के पास तीसरा मंदिर है। यही तीसरा मंदिर श्रीरंगम के नाम से विख्यात है और इसी को वैष्णव लोग सबसे अधिक महत्त्व का मानते हैं।

इसी प्रकार कावेरी के तट पर शैव धर्म के भी कितने ही तीर्थ हैं। चिदम्बरम का मंदिर कावेरी की ही देन है। श्रीरंगम के पास बना हुआ जंबुकेश्वरम

का प्राचीन मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है। तिरुवैयारू, कुंभकोणम, तंजावूर, शीरकाल आदि और भी अनेक स्थानों पर शिवजी के मंदिर कावेरी के तट पर बने हैं। तिरुचिरापल्ली शहर के बीच में एक ऊंचे टीले पर बना हुआ मातृभूतेश्वर का मंदिर और उसके चारों ओर का किला विख्यात है। एक जमाने में तिरुचिरापल्ली जैन धर्म का भी केंद्र माना जाता था।
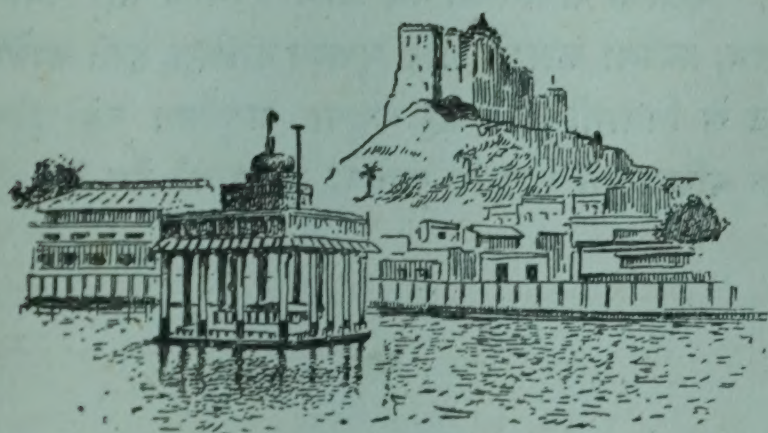
मातृभूतेश्वर मंदिर

शैव और वैष्णव संप्रदाय के कितने ही आचार्य और संत कवि कावेरी के तट पर हुए हैं। विख्यात वैष्णव आचार्य श्री रामानुज को आश्रय देनेवाला श्रीरंगपट्टणम का राजा विष्णुवर्द्धन था। तिरुमंगै

आलवार और कुछ अन्य वैष्णव संतों को कावेरी-तीर ने ही जन्म दिया था। सोलह वर्ष की आयु में शैवधर्म का देशभर में प्रचार करनेवाले संतकवि ज्ञानसंबंधर कावेरी-तट पर ही हुए थे।

महाकवि कंबन ने तमिल भाषा में अपनी विख्यात रामायण की रचना इसी कावेरी के तट पर की थी। तमिल भाषा के कितने ही विख्यात कवियों को माता कावेरी ने जन्म दिया है।

दक्षिणी संगीत को नये प्राण देनेवाले संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री और मुत्तय्य दीक्षित, इसी कावेरी तट के निवासी थे। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि दक्षिण की संस्कृति कावेरी माता की देन है।

●

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

३५

छः आना